स्तनपान होशियार बनाता है मगर सिर्फ लड़कों को

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के टेलेथॉन इंस्टीट्यूट फॉर चाइल्ड हेल्थ रिसर्च की वेण्डी ओडी और उनके साथियों द्वारा किया गया अध्ययन दर्शाता है कि बच्चों को स्तनपान मिले तो वे ज़्यादा होशियार बनते हैं, मगर यह असर सिर्फ लड़कों में ही होता है, लड़कियों में नहीं। वे स्वयं भी इस परिणाम पर आश्चर्यचकित हैं।

पूर्व के अध्ययनों से यह तो पहले ही पता था कि जिन बच्चों को स्तनपान मिला था उनका आईक्यू उन बच्चों की तुलना में ज़्यादा रहता है जिन्हें स्तनपान न कराया गया हो। मगर इन अध्ययनों में आंकड़ों को लिंग के आधार पर अलग-अलग करके नहीं देखा गया था। पहले किए गए अध्ययनों में यह भी देखा गया था कि आम तौर पर स्तनपान कराने वाली माताएं अपेक्षाकृत समृद्ध परिवार की होती हैं, जिसका असर बच्चे की परवरिश और आईक्यू पर ज़रूर पड़ता होगा। वैसे स्तनपान और माता की आर्थिक स्थिति का सम्बंध भारत में शायद ऐसा न हो।

बहरहाल, वेण्डी और उनके साथियों ने 10 वर्ष उम्र के 1000 बच्चों के संदर्भ में यह देखने का प्रयास किया कि क्या बचपन में स्तनपान मिलने या न मिलने का असर बच्चों के टेस्ट के स्कोर्स पर पड़ता है। अध्ययन से पता चला है कि जिन लड़कों को पहले कम से कम 6 माह की उम्र तक मुख्यतः स्तनपान पर रखा गया था उन्होंने फॉर्मूला दूध पर पले बच्चों की अपेक्षा गणित व लेखन परीक्षण में 9 प्रतिशत, स्पेलिंग में 7 प्रतिशत और पढ़ने में 6 प्रतिशत अधिक अंक पाए। मगर दो तरह की लड़कियों के अंकों में कोई उल्लेखनीय अंतर नज़र नहीं आया।

ओडी ने अपने अध्ययन के परिणामों को अन्य अध्ययनों से जोड़कर देखने की कोशिश की। उन्होंने पाया कि अन्य अध्ययन दर्शाते हैं कि लड़कों को मस्तिष्क के विकास की महत्त्वपूर्ण अवधि में अधिक तनावों और प्रतिकूलताओं का सामना करना होता है। ओडी का ख्याल है कि संभवतः लड़कियों को बचपन में एस्ट्रोजेन की उच्च मात्रा की उपस्थिति के चलते कुछ सुरक्षा प्राप्त होती है। अतः हो सकता है कि स्तन दूध में मौजूद एस्ट्रोजेन ही लड़कों को यह अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करता है, जो लड़कियों को कुदरती तौर पर हासिल है।

ये परिणाम विश्व स्वास्थ्य संगठन की उस सिफारिश को बल देते हैं कि बच्चों को प्रथम 6 माह तक मात्र मां का दूध मिलना चाहिए और ऐसा न करने पर उनका बौद्धिक व सामाजिक विकास बाधित हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***